# फिलिप्पियों की पत्री



1 [1]यीशु मसीह के सेवक पौलुस और तिमुथियुस की
ओर से मसीह यीशु में स्थित फिलिप्पी के रहने वाले
सभी संत जनों के नाम जो वहाँ निरीक्षकों और कलीसिया के
सेवकों के साथ निवास करते हैं:
[2]हमारे परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की
ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

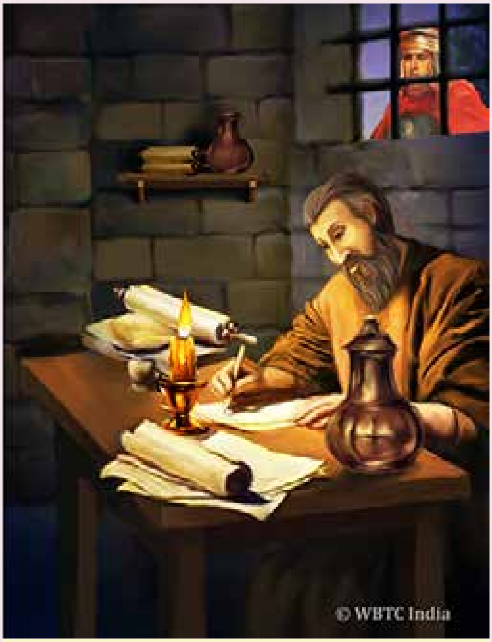


*रोम के बन्दीगृह में से पौलुस ने 4 पत्र लिखे। वे इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन हैं*

## पौलुस की प्रार्थना

[3]मैं जब जब तुम्हें याद करता हूँ, तब तब परमेश्वर को धन्यवाद
देता हूँ। [4]अपनी हर प्रार्थना में मैं सदा प्रसन्नता के साथ तुम्हारे
लिये प्रार्थना करता हूँ। [5]क्योंकि पहले ही दिन से आज तक
तुम सुसमाचार के प्रचार में मेरे सहयोगी रहे हो। [6]मुझे इस बात
का पूरा भरोसा है कि वह परमेश्वर जिसने तुम्हारे बीच ऐसा
उत्तम कार्य प्रारम्भ किया है, वही उसे उसी दिन तक बनाए
रखेगा, जब मसीह यीशु फिर आकर उसे पूरा करेगा।
[7]तुम सब के विषय में मेरे लिये ऐसा सोचना ठीक ही
है। क्योंकि तुम सब मेरे मन में बसे हुए हो। और न केवल
तब, जब मैं जेल में हूँ, बल्कि तब भी जब मैं सुसमाचार के
सत्य की रक्षा करते हुए, उसकी प्रतिष्ठा में लगा था, तुम सब
इस विशेषाधिकार में मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी रहे हो।
[8]परमेश्वर मेरा साक्षी है कि मसीह यीशु द्वारा प्रकट प्रेम से मैं तुम सब के लिये व्याकुल रहता हूँ।
[9]मैं यही प्रार्थना करता रहता हूँ:
तुम्हारा प्रेम गहन दृष्टि और ज्ञान के साथ निरन्तर बढ़े। [10]ये गुण पाकर भले बुरे में अन्तर करके, सदा भले को
अपना लोगे। और इस तरह तुम पवित्र व अकलुष बन जाओगे उस दिन को जब मसीह आयेगा। [11]यीशु मसीह
की करुणा को पा कर तुम अति उत्तम काम करोगे जो प्रभु को महिमा देते हैं और उसकी स्तुति बनते हो।

## पौलुस की विपत्तियाँ प्रभु के कार्य में सहायक

[12]हे भाइयो, मैं तुम्हें जना देना चाहता हूँ कि मेरे साथ जो कुछ हुआ है, उससे सुसमाचार को बढ़ावा ही मिला है।
[13]परिणामस्वरूप संसार के समूचे सुरक्षा दल तथा अन्य सभी लोगों को यह पता चल गया है कि मुझे मसीह का
अनुयायी होने के कारण ही बंदी बनाया गया है। [14]इसके अतिरिक्त प्रभु में स्थित अधिकतर भाई मेरे बंदी होने के
कारण उत्साहित हुए हैं और अधिकाधिक साहस के साथ सुसमाचार को निर्भयतापूर्वक सुना रहे हैं।
[15]यह सत्य है कि उनमें से कुछ ईर्ष्या और बैर के कारण मसीह का उपदेश देते हैं किन्तु दूसरे लोग सदभावना से प्रेरित
होकर मसीह का उपदेश देते हैं। [16]ये लोग प्रेम के कारण ऐसा करते हैं क्योंकि ये जानते हैं कि परमेश्वर ने सुसमाचार का
बचाव करने के लिए ही मुझे यहाँ रखा है। [17]किन्तु कुछ और लोग तो सच्चाई के साथ नहीं, बल्कि स्वार्थ पूर्ण इच्छा

से मसीह का प्रचार करते है क्योंकि वे सोचते हैं कि इससे वे बंदीगृह में मेरे लिए कष्ट पैदा कर सकेंगे। [18]किन्तु इससे
कोई अंतर नहीं पड़ता। महत्वपूर्ण तो यह है कि एक ढंग से या दूसरे ढंग से, चाहे बुरा उद्देश्य हो, चाहे भला प्रचार तो
मसीह का ही होता है और इससे मुझे आनन्द मिलता है और आनन्द मिलता ही रहेगा।

[19]क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा और उस सहायता से जो यीशु मसीह की आत्मा से प्राप्त
होती है, परिणाम में मेरी रिहाई ही होगी। [20]मेरी तीव्र इच्छा और आशा यही है और मुझे इसका विश्वास है कि मैं
किसी भी बात से निराश नहीं होऊँगा बल्कि पूर्ण निर्भयता के साथ जैसे मेरे देह से मसीह की महिमा सदा होती रही
है, वैसे ही आगे भी होती रहेगी, चाहे मैं जीऊँ और चाहे मर जाऊँ। [21]क्योंकि मेरे जीवन का अर्थ है मसीह और मृत्यु
का अर्थ है एक उपलब्धि। [22]किन्तु यदि मैं अपने इस शरीर से जीवित ही रहूँ तो इसका अर्थ यह होगा कि मैं अपने
कर्म के परिणाम का आनन्द लूँ। सो मैं नहीं जानता कि मैं क्या चुनूँ। [23]दोनों विकल्पों के बीच चुनाव में मुझे कठिनाई
हो रही है। मैं अपने जीवन से विदा होकर मसीह के पास जाना चाहता हूँ क्योंकि वह अति उत्तम होगा। [24]किन्तु इस
शरीर के साथ ही मेरा यहाँ रहना तुम्हारे लिये अधिक आवश्यक है। [25]और क्योंकि यह मैं निश्चय के साथ जानता हूँ
कि मैं यहीं रहूँगा और तुम सब की आध्यात्मिक उन्नति और विश्वास से उत्पन्न आनन्द के लिये तुम्हारे साथ रहता
ही रहूँगा। [26]ताकि तुम्हारे पास मेरे लौट आने के परिणामस्वरूप तुम्हें मसीह यीशु में स्थित मुझ पर गर्व करने का और
अधिक आधार मिल जाये।

[27]किन्तु हर प्रकार से ऐसा करो कि तुम्हारा आचरण मसीह के सुसमाचार के अनुकूल रहे। जिससे चाहे मैं
तुम्हारे पास आकर तुम्हें देखूँ और चाहे तुमसे दूर रहूँ, तुम्हारे बारे में यही सुनूँ कि तुम एक ही आत्मा में दृढ़ता के
साथ स्थिर हो और सुसमाचार से उत्पन्न विश्वास के लिए एक जुट होकर संघर्ष कर रहे हो। [28]तथा मैं यह भी
सुनना चाहता हूँ कि तुम अपने विरोधियों से किसी प्रकार भी नहीं डर रहे हो। तुम्हारा यह साहस उनके विनाश
का प्रमाण है और यही प्रमाण है तुम्हारी मुक्ति का और परमेश्वर की ओर से ऐसा ही किया जायेगा। [29]क्योंकि
मसीह की ओर से तुम्हें न केवल उसमें विश्वास करने का बल्कि उसके लिए यातनाएँ झेलने का भी विशेषाधिकार
दिया गया है। [30]तुम जानते हो कि तुम उसी संघर्ष में जुटे हो, जिसमें मैं जुटा था और जैसा कि तुम सुनते हो आज
तक मैं उसी में लगा हूँ।



### एकतापूर्वक एक दूसरे का ध्यान रखो

**2** [1]फिर तुम लोगों में यदि मसीह में
कोई उत्साह है, प्रेम से पैदा हुई कोई
सांत्वना है, यदि आत्मा में कोई भागेदारी
है, स्नेह की कोई भावना और सहानुभूति
है [2]तो मुझे पूरी तरह प्रसन्न करो। मैं चाहता
हूँ, तुम एक तरह से सोचो, परस्पर एक जैसा
प्रेम करो, आत्मा में एका रखो और एक
जैसा ही लक्ष्य रखो। [3]ईर्ष्या और बेकार
के अहंकार से कुछ मत करो। बल्कि नम्र
बनो तथा दूसरों को अपने से उत्तम समझो।
[4]तुममें से हर एक को चाहिए कि केवल
अपना ही नहीं, बल्कि दूसरों के हित का
भी ध्यान रखे।

**फिलिप्पी:** एजीयन सागर से नौ मील दूर स्थित एक समृद्ध नगर, जो यूरोप में पहली बार सुसमाचार पहुँचने के स्थान के तौर पर विख्यात है

*फिलिप्पी में पौलुस का परम्परागत बन्दीगृह*

### यीशु से निःस्वार्थ होना सीखो

5अपना चिंतन ठीक वैसा ही रखो जैसा मसीह यीशु का था।
6 जो अपने स्वरूप में यद्यपि साक्षात् परमेश्वर था, किन्तु उसने परमेश्वर के साथ अपनी इस समानता को कभी
ऐसे महाकोष के समान नहीं समझा जिससे वह चिपका ही रहे।
7 बल्कि उसने तो अपना सब कुछ त्याग कर एक सेवक का रूप ग्रहण कर लिया और मनुष्य के समान बन गया।
और जब वह अपने बाहरी रूप में मनुष्य जैसा बन गया
8 तो उसने अपने आप को नवा लिया। और इतना आज्ञाकारी बन गया कि अपने प्राण तक निछावर कर दिये
और वह भी क्रूस पर।
9 इसलिए परमेश्वर ने भी उसे ऊँचे से ऊँचे स्थान पर उठाया और उसे वह नाम दिया जो सब नामों के ऊपर है
10 ताकि सब कोई जब यीशु के नाम का उच्चारण होते हुए सुनें, तो नीचे झुक जायें। चाहे वे स्वर्ग के हों, धरती
पर के हों और चाहे धरती के नीचे के हों।
11 और हर जीभ परम पिता परमेश्वर की महिमा के लिये स्वीकार करें, "यीशु मसीह ही प्रभु है।"

### परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनो

12इसलिए मेरे प्रियों, तुम मेरे निर्देशों का जैसा उस समय पालन किया करते थे जब मैं तुम्हारे साथ था, अब जबकि मैं
तुम्हारे साथ नहीं हूँ तब तुम और अधिक लगन से उनका पालन करो। परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण आदर भाव के साथ
अपने उद्धार को पूरा करने के लिये तुम लोग काम करते जाओ। 13क्योंकि वह परमेश्वर ही है जो उन कामों की इच्छा
और उन्हें पूरा करने का कर्म, जो परमेश्वर को भाते हैं, तुम में पैदा करता है।
14बिना कोई शिकायत या लड़ाई झगड़ा किये सब काम करते रहो, 15ताकि तुम भोले भाले और पवित्र बन जाओ।
तथा इस कुटिल और पथभ्रष्ट पीढ़ी के लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक बालक बन जाओ। उन के बीच अंधेरी
दुनिया में तुम उस समय तारे बन कर चमको 16जब तुम उन्हें जीवनदायी सुसंदेश सुनाते हो। तुम ऐसा ही करते रहो ताकि
मसीह के फिर से लौटने के दिन मैं यह देख कर कि मेरे जीवन की भाग दौड़ बेकार नहीं गयी, तुम पर गर्व कर सकूँ।
17तुम्हारा विश्वास एक बलि के रूप में है और यदि मेरा लहू तुम्हारी बलि पर दाखमधु के समान उँडेल दिया भी
जाये तो मुझे प्रसन्नता है। तुम्हारी प्रसन्नता में मेरा भी सहभाग है। 18उसी प्रकार तुम भी प्रसन्न रहो और मेरे साथ
आनन्द मनाओ।

### तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस

19प्रभु यीशु की सहायता से मुझे तीमुथियुस को तुम्हारे पास शीघ्र ही भेज देने की आशा है ताकि तुम्हारे समाचारों
से मेरा भी उत्साह बढ़ सके। 20क्योंकि दूसरा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसकी भावनाएँ मेरे जैसी हों और जो तुम्हारे
कल्याण के लिये सच्चे मन से चिंतित हो। 21क्योंकि और सभी अपने-अपने कामों में लगे हैं। यीशु मसीह के कामों में
कोई नहीं लगा है। 22तुम उसके चरित्र को जानते हो कि सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ उसने वैसे ही सेवा की है, जैसे
एक पुत्र अपने पिता के साथ करता है। 23सो मुझे जैसे ही यह पता चलेगा कि मेरे साथ क्या कुछ होने जा रहा है मैं उसे
तुम्हारे पास भेज देने की आशा रखता हूँ। 24और मेरा विश्वास है कि प्रभु की सहायता से मैं भी जल्दी ही आऊँगा।
25मैं यह आवश्यक समझता हूँ कि इपफ्रुदीतुस को तुम्हारे पास भेजूँ जो मेरा भाई है, साथी कार्यकर्ता है और
सहयोगी कर्म वीर है तथा मुझे आवश्यकता पड़ने पर मेरी सहायता के लिये तुम्हारा प्रतिनिधि रहा है, 26क्योंकि वह
तुम सब के लिये व्याकुल रहा करता था और इससे बहुत चिन्तित था कि तुमने यह सुना था कि वह बीमार पड़ गया
था। 27हाँ, वह बीमार तो था, और वह भी इतना कि जैसे मर ही जायेगा। किन्तु परमेश्वर ने उस पर अनुग्रह किया (न
केवल उस पर बल्कि मुझ पर भी) ताकि मुझे दुख पर दुख न मिले। 28इसीलिए मैं उसे और भी तत्परता से भेज रहा

हूँ ताकि जब तुम उसे देखो तो एक बार फिर प्रसन्न हो जाओ और मेरा दुःख भी जाता रहे। 29इसलिए प्रभु में बड़ी
प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत करो और ऐसे लोगों का आधिकाधिक आदर करते रहो। 30क्योंकि मसीह के काम
के लिये वह लगभग मर गया था ताकि तुम्हारे द्वारा की गयी मेरी सेवा में जो कमी रह गई थी, उसे वह पूरा कर दे,
इसके लिये उसने अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

### मसीह सबके ऊपर है

3 1अतः मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्द मनाते रहो। तुम्हें बार-बार उन्हीं बातों को लिखते रहने से मुझे कोई कष्ट नहीं
होता है और तुम्हारे लिए तो यह सुरक्षित है ही।

2इन कुत्तों से सावधान रहो जो कुकर्मों में लगे है। उन बुरे काम करने वालों से सावधान रहो। 3क्योंकि सच्चे ख़तना
युक्त व्यक्ति तो हम है जो अपनी उपासना को परमेश्वर की आत्मा द्वारा अर्पित करते हैं। और मसीह यीशु पर गर्व
रखते हैं तथा जो कुछ शारीरिक है, उस पर भरोसा नहीं करते हैं। 4यद्यपि मैं शरीर पर भी भरोसा कर सकता था। पर यदि
कोई और ऐसे सोचे कि उसके पास शारीरिकता पर विश्वास करने का विचार है तो मेरे पास तो वह और भी अधिक
है। 5जब मैं आठ दिन का था, मेरा ख़तना कर दिया गया था। मैं इस्राएली हूँ। मैं बिन्यामीन के वंश का हूँ। मैं इब्रानी
माता-पिता से पैदा हुआ एक इब्रानी हूँ। जहाँ तक व्यवस्था के विधान तक मेरी पहुँच का प्रश्न है, मैं एक फ़रीसी हूँ।
6जहाँ तक मेरी निष्ठा का प्रश्न है, मैंने कलीसिया को बहुत सताया था। जहाँ तक उस धार्मिकता का सवाल है जिसे
व्यवस्था का विधान सिखाता है, मैं निर्दोष था।

7किन्तु तब जो मेरा लाभ था, आज उसी को मसीह के लिये मैं अपनी हानि समझाता हूँ। 8इससे भी बड़ी बात यह है
कि मैं अपने प्रभु मसीह यीशु के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण आज तक सब कुछ को हीन समझाता हूँ। उसी के लिए मैंने
सब कुछ का त्याग कर दिया है और मैं सब कुछ को घृणा की वस्तु समझने लगा हूँ ताकि मसीह को पा सकूँ। 9और
उसी में पाया जा सकूँ-मेरी उस धार्मिकता के कारण नहीं जो व्यवस्था के विधान पर टिकी थी, बल्कि उस धार्मिकता
के कारण जो मसीह में विश्वास के कारण मिलती है, जो परमेश्वर से मिलती है और जिसका आधार विश्वास है।
10मैं मसीह को जानना चाहता हूँ और उस शक्ति का अनुभव करना चाहता हूँ जिससे उसका पुनरुत्थान हुआ था। मैं
उसकी यातनाओं का भी सहभागी होना चाहता हूँ। और उसी रूप को पा लेना चाहता हूँ जिसे उसने अपनी मृत्यु के
द्वारा पाया था। 11इस आशा के साथ कि मैं भी इस प्रकार मरे हुओं में से उठ कर पुनरुत्थान को प्राप्त करूँ।

### लक्ष्य पर पहुँचने की यत्न करते रहो

12ऐसा नहीं है कि मुझे अपनी उपलब्धि हो चुकी है अथवा मैं पूरा सिद्ध ही बन चुका हूँ। किन्तु मैं उस उपलब्धि को
पा लेने के लिये निरन्तर यत्न कर रहा हूँ जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे अपना बधुँआ बनाया था। 13हे भाइयो! मैं
यह नहीं सोचता कि मैं उसे प्राप्त कर चुका हूँ। पर बात यह है कि बीती को बिसार कर जो मेरे सामने है, उस लक्ष्य
तक पहुँचने के लिये मैं संघर्ष करता रहता हूँ। 14मैं उस लक्ष्य के लिये निरन्तर यत्न करता रहता हूँ कि मैं अपने उस
पारितोषिक को जीत लूँ, जिसे मसीह यीशु में पाने के लिये परमेश्वर ने हमें ऊपर बुलाया है।

15ताकि उन लोगों का, जो हममें से सिद्ध पुरुष बन चुके हैं, भाव भी ऐसा ही रहे। किन्तु यदि तुम किसी बात को
किसी और ही ढँग से सोचते हो तो तुम्हारे लिये उसका स्पष्टीकरण परमेश्वर कर देगा। 16जिस सत्य तक हम पहुँच
चुके हैं, हमें उसी पर चलते रहना चाहिए।

17हे भाइयो, औरों के साथ मिलकर मेरा अनुकरण करो। जो उदाहरण हमने तुम्हारे सामने रखा है, उसके अनुसार जो
जीते हैं, उन पर ध्यान दो। 18क्योंकि ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो मसीह के क्रूस से शत्रुता रखते हुए जीते हैं। मैंने तुम्हें
बहुत बार बताया है और अब भी मैं यह बिलख बिलख कर कह रहा हूँ। 19उनका नाश उनकी नियति है। उनका पेट
ही उनका ईश्वर है। और जिस पर उन्हें लजाना चाहिए, उस पर वे गर्व करते हैं। उन्हें बस भौतिक वस्तुओं की चिंता

है। 20किन्तु हमारी जन्मभूमि तो स्वर्ग में है। वहीं से हम अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आने की बाट जोह रहे
हैं। 21अपनी उस शक्ति के द्वारा जिससे सब वस्तुओं को वह अपने अधीन कर लेता है, हमारी दुर्बल देह को बदल
कर अपनी दिव्य देह जैसा बना देगा।

## फिलिप्पियों को पौलुस का निर्देश

4 1हे मेरे प्रिय भाईयों, तुम मेरी प्रसन्नता हो, मेरे गौरव हो। तुम्हें जैसे मैंने बताया है, प्रभु में तुम वैसे ही दृढ़ बने रहो।
2मैं यहूदिया और संतुखे दोनों को प्रोत्साहित करता हूँ कि तुम प्रभु में एक जैसे विचार बनाये रखो। 3मेरे सच्चे
साथी तुझसे भी मेरा आग्रह है कि इन महिलाओं की सहायता करना। ये क्लेमेन्स तथा मेरे दूसरे सहकर्मियों सहित
सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ जुटी रही हैं। इनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गये है।
4प्रभु में सदा आनन्द मनाते रहो। इसे मैं फिर दोहराता हूँ, आनन्द मनाते रहो।
5तुम्हारी सहनशील आत्मा का ज्ञान सब लोगों को हो। प्रभु पास ही है। 6किसी बात कि चिंता मत करो, बल्कि
हर परिस्थिति में धन्यवाद सहित प्रार्थना और विनय के साथ अपनी याचना परमेश्वर के सामने रखते जाओ। 7इसी
से परमेश्वर की ओर से मिलने वाली शांति, जो समझ से परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारी बुद्धि को मसीह यीशु में
सुरक्षित बनाये रखेगी।
8हे भाइयो, उन बातों का ध्यान करो जो सत्य हैं, जो भव्य है, जो उचित है, जो पवित्र है, जो आनन्द दायी है, जो
सराहने योग्य है या कोई भी अन्य गुण या कोई प्रशंसा 9जिसे तुमने मुझसे सीखा है, पाया है या सुना है या जिसे करते
मुझे देखा है। उन बातों का अभ्यास करते रहो। शांति का स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।



## फिलिप्पी मसीहियों के उपहार के लिए पौलुस का धन्यवाद

10तुम निश्चय ही मेरी भलाई के लिये सोचा करते थे किन्तु तुम्हें उसे दिखाने का अवसर नहीं मिला था, किन्तु अब
आखिरकार तुममें मेरे प्रति फिर से चिंता जागी है। इससे मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हुआ हूँ। 11किसी आवश्यकता के
कारण मैं यह नहीं कह रहा हूँ। क्योंकि जैसी भी परिस्थिति में मैं रहूँ, मैंने उसी में संतोष करना सीख लिया है। 12मैं अभावों
के बीच रहने का रहस्य भी जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि सम्पन्नता में कैसे रहा जाता है। कैसा भी समय हो और
कैसी भी परिस्थिति चाहे पेट भरा हो और चाहे भूखा, चाहे पास में बहुत कुछ हो और चाहे कुछ भी नहीं, मैंने उन सब में
सुखी रहने का भेद सीख लिया है। 13जो मुझे शक्ति देता है, उसके द्वारा मैं सभी परिस्थितियों का सामना कर सकता हूँ।
14कुछ भी हो तुमने मेरे कष्टों में हाथ बटा कर अच्छा ही किया है। 15हे फिलिप्पियो, तुम तो जानते ही हो,
सुसमाचार के प्रचार के उन आरम्भिक दिनों में जब मैंने मकिदुनिया छोड़ा था, तो लेने-देने के विषय में केवल मात्र
तुम्हारी कलीसिया को छोड़ कर किसी और कलीसिया ने मेरा हाथ नहीं बटाया था। 16मैं जब थिस्सिलुनीके में था,
मेरी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिये तुमने बार बार मुझे सहायता भेजी थी। 17ऐसा नहीं है कि मैं उपहारों का इच्छुक
हूँ, बल्कि मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम्हारे खाते में लाभ जुड़ता ही चला जाये। 18तुमने इपफ्रुदीतुस के हाथों जो उपहार
मधुर गंध भेंट के रूप में मेरे पास भेजे हैं वे एक ऐसा स्वीकार करने योग्य बलिदान है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है।
उन उपहारों के कारण मेरे पास मेरी आवश्यकता से कहीं अधिक हो गया है, मुझे पूरी तरह दिया गया है, बल्कि उससे
भी अधिक भरपूर दिया गया है। वे वस्तुएँ मधुर गंध भेंट के रूप में हैं, एक ऐसा स्वीकार करने योग्य बलिदान जिससे
परमेश्वर प्रसन्न होता है। 19मेरा परमेश्वर तुम्हारी सभी आवश्यकताओं को मसीह यीशु में प्राप्त अपने भव्य धन से
पूरा करेगा। 20हमारे परम पिता परमेश्वर की सदा सदा महिमा होती रहे। आमीन।
21मसीह यीशु के हर एक संत को नमस्कार। मेरे साथ जो भाई हैं, तुम्हें नमस्कार करते हैं। 22तुम्हें सभी संत और
विशेष कर कैसर परिवार के लोग नमस्कार करते हैं।
23तुम में से हर एक पर हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।